International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 56-64

डॉ0 नरेन्द्र कोहली के कृष्णपरक उपन्यासों में जीवन–मूल्य

डॉ. राहुल उठवाल
राष्ट्रीय एकता संस्थान (आई.एन.आई.) कॉलेज ऑफ मिलिट्री इंजिनियरिंग (सी.एम.ई.,) कैम्पस दापोड़ी, पुणे, मुंबई, भारत।

प्रस्तावना

महान रचनाकार का साहित्य केवल मनोरंजन का साधन मात्र नहीं होता और न ही वह केवल कलात्मक प्रौढ़ता का प्रतीक ही होता, अपितु उसकी श्रेष्ठता का निर्णय उसमें अन्तर्निहित शक्ति और प्रेरणा के आधार पर होता है। शब्द–व्यापार की प्रक्रिया में तराशी हुई शैली मात्र से समाज का कल्याण सम्भव नहीं है, मानव समाज का सच्चा प्रतिनिधि होने के कारण साहित्य सृष्टा उसकी आवश्यकता से पूर्णतः अवगत होता है। मानव जीवन को देखने समझने की उसके पास विलक्षण दृष्टि होती है, समय के साथ–साथ विकसित होने वाला जीवन सहस्रदल कमल के धीरे–धीरे खुलने वाले संपुट के समान ही अपने सत्य को विभिन्न आयामों में प्रस्फुटित करता है। उसका यह क्रम सुन्दर और परिणाम शिवात्मक होता है। भीतर कमल–कोष में बैठी हुई मधुमक्षिका केवल मधु पहचानती है, पंखुडियों पर मंडराता भ्रमर केवल सौन्दर्य से परिचित होता है पर उससे पृथक रहकर तटस्थ भाव उसे देखने वाला व्यक्ति ही मधु–सौरभ से युक्त कमल के सच्चे स्वरूप को पहचान पाता है। मानव जीवन के सत्य के सम्बन्ध में श्रेष्ठ रचनाकार की दृष्टि ऐसी ही होती है।

डॉ0 नरेन्द्र कोहली का रचना काल अनेक विसंगतियों से पूर्ण एवं निराशा का वितान लिए हुए है। उनके कृष्णपरक उपन्यासों में मानवता, असंतोष, अव्यवस्था, कुण्ठा, संत्रास, विश्वासघात से गुजर रही है, ऐसी स्थिति में कोहली जी ने मानव जीवन के शाश्वत् गुण–धर्म को समझा और रचनाकार के दायित्त्वों का उचित निर्वाह करते हुए युगीन समाज को स्वस्थ विकास देने एवं भारतीय संस्कृति के लुप्त स्वरों को पुनः प्रतिष्ठापित करने हेतु अपने साहित्य में जीवन–मूल्यों को व्यवस्थित किया है। उनका साहित्य आज की दिग्भ्रमित मानवता को दिशा–बोध देने की पूर्ण प्रासंगिकता रखता है।

डॉ0 नरेन्द्र कोहली के कृष्णपरक उपन्यास अतीत को वर्तमान में चित्रित कर उसे एक नयी ज्योति प्रदान करते हैं। कृष्णपरक उपन्यास युग बोधक होने के साथ ही देश और काल की परिधि से ऊपर उठे हुए हैं। विश्व मानवता के कल्याण का सन्देश लिए हुए वह हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं, जिसका प्रत्येक पक्ष सत्यं, शिवं और सुन्दरं से ओत–प्रोत है।

जीवन–मूल्य के आलोक में कोहली जी के कृष्णपरक उपन्यासों के विश्लेषण का कदाचित मेरे द्वारा किया जा रहा प्रथम प्रयास है। वस्तुतः कोहली जी के कृष्णपरक उपन्यास, उनके अन्य उपन्यासों तथा साहित्य से किसी भी अर्थ में कम महत्त्वपूर्ण नहीं। जीवन–मूल्यों के अध्ययन की दृष्टि से उनका महत्त्व और भी अधिक इसलिए है कि कोहली जी द्वारा प्रतिष्ठापित जीवन–मूल्य इसमें व्यवस्थित हो सके हैं। उन्होंने जीवन–मूल्यों को विविध रूपों में व्यवस्थित कर आधुनिक मानव समाज को बहुत कुछ देने का प्रयास किया है। साथ ही उन्होंने जीवन के विविध आयामों को प्रस्तुत करते समय मानव के स्वास्थ्य एवं सम्यक् विकास के लिए साहित्य–सौन्दर्य की माला में जीवन–रूपी मूल्यों को पिरोया है, जिनका प्रकाश शीतल एवं मंगलमय है। विषय विस्तार को देखते हुए प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध हेतु मात्र उनके कृष्णपरक (महासमर) उपन्यासों को ही चुना गया है। इन कृष्णपरक (महासमर) उपन्यासों को लिखते समय उन्होंने आधुनिक युग–बोध को सदैव स्मरण रखा है। कृष्णपरक उपन्यासों में हम युधिष्ठिर, कृष्ण, कुन्ती, द्रोपदी, बलराम, अर्जुन, भीम तथा कर्ण आदि चरित्रों को अत्यन्त नवीन रूप में देखते हैं।

कोहली जी के कृष्णपरक उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि उपन्यासकार भली–भांति समझ रहा है कि उसके पाठक वर्तमान काल के हैं। इस कारण उन्होंने महाभारत की कथा का आश्रय लेते हुए भी नयी युग दृष्टि को विस्मृत नहीं किया है। महाभारत की तरह ही, इन उपन्यासों में भी प्रत्येक पात्र का एक जीवन–मूल्य है। वह अपनी प्रारम्भिक अवस्था में उस जीवन–मूल्य में पलता तथा विकसित होता है, परन्तु जब धर्म–क्षेत्र कुरुक्षेत्र में अट्ठारह अक्षौहिणी सेना आमने सामने खड़ी होती हैं, तो जीवन मूल्य डगमगाने लगते हैं। राज्य प्राप्त करने की लिप्सा, दुर्योधन तथा उसके सहयोगी पात्रों का जीवन–मूल्य परिवर्तित कर देती है। यहाँ तक की धृतराष्ट्र और गान्धारी भी अपने जीवन–मूल्य सुरक्षित नहीं रख पाते। आश्चर्य तब होता है कि गंगापुत्र महामानव पितामह भीष्म काम–वासना तथा राज्य प्राप्ति की लालसा का परित्याग करने में तो सफल हो जाते हैं, परन्तु अपने नैतिक–मूल्य की रक्षा करने में असफल ही नहीं असहाय भी दिखाई देते हैं।

ऊहापोह की जो स्थिति महामानव के सम्बन्ध में बनती है वही द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, युधिष्ठिर, भीम तथा अर्जुन जैसे पात्रों के विषय में भी घटित होती है। उपन्यासों के स्त्री पात्र भी इसी बनते–बिगड़ते जीवन–मूल्यों की भंवर में डूबते–उतराते दिखाई देते हैं।

कोहली जी के कृष्णपरक उपन्यास हाथ से फेंके गए वाणों की तरह गति एवं शक्ति से हीन नहीं है; जो लक्ष्य तक न पहुँचकर बीच में ही शिथिल हो जाए; अपितु यह उन वाणों की तरह हैं, जो धनुष पर संधान कर विलक्षण जीवन–दृष्टि से वाण की नोंक और लक्ष्य को मिलाते हुए संघानित किए गए हैं और अपने लक्ष्य–वेध में पूर्ण समर्थ हैं।

जीवन–मूल्य के प्रकाश में कोहली जी के कृष्णपरक उपन्यासों के गम्भीर विश्लेषण एवं अपेक्षित लक्ष्य सिद्ध के लिए प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को भूमिका तथा समाहार को छोड़कर सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में जीवन–मूल्य के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टियों की एक प्रत्याभिज्ञता का प्रयास किया गया है। आज मनुष्य देश, काल, जाति, वर्ण, सम्प्रदाय एवं अन्य तरह की इकाइयों में विभाजित होकर अपने आस–पास वैषम्य की

खाई चौड़ा करने में लगा है ऐसी स्थिति में जीवन–मूल्यों का अध्ययन उनकी उपादेयता का विश्लेषण एवं चिंतन नितान्त आवश्यक है, ताकि बिखराव में ऐक्य भावना संव्यूहनात्मक विवेक एवं अपेक्षित संवेदनात्मक विश्व बन्धुत्व स्थापित किया जा सके। इस अध्याय में जीवन–मूल्य की अवधारणा में विद्वानों द्वारा ऐसे ही मूल्यों एवं सत्यों की खोज तथा अनुसंधान का कार्य सावधानी पूर्वक हो सका है। विद्वानों ने जीवन के सम्यक् विकास हेतु जीवन–मूल्यों की कल्पना की है और इन्हीं जीवनादर्शों को मानदण्ड मानकर मानव–जीवन को कसौटी पर कसा है। मूल्यों के विवेचन के अन्तर्गत अनेक विद्वानों के विचारों को प्रस्तुत किया गया है। मूल्य मीमांसा में, इसे एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में माना है। परन्तु कुछ विद्वान इसे स्वतंत्र विज्ञान के रूप में स्वीकार नहीं करते। इसके अन्तर्गत मूल्य के स्वरूप, तत्त्व और प्रकार आदि का विस्तृत अध्ययन एवं विवेचन किया गया है।

साहित्य में जीवन–मूल्य आदि पर भी चर्चा करते हुए कहा गया है कि हर एक युग के साहित्य में जीवन–मूल्य पाये जाते हैं और साहित्य के यह मूल्य स्थायी एवं सार्थक होते हैं। परन्तु आज के समय में जीवन–मूल्यों में अबाध गति से परिवर्तन हो रहे हैं, एक ही काल में जो मूल्य स्वीकार किये जाते हैं, वे दूसरे ही काल में अपनी महत्ता खो देते हैं, इसी कारण आज मानव जीवन में भिन्न–भिन्न परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रहीं हैं।

जीवन–मूल्य अवधारणा के स्रोत के अन्तर्गत विद्वानों में मतभेद दिखाई देते हैं परन्तु आज के समय में जीवन–मूल्यों का उद्‌गम स्रोत बदल गया है, इसी कारण आज के संदर्भ में जीवन–मूल्यों में भी एक प्रकार का बदलाव देखा जा सकता है। परन्तु आध्यात्मिक धारणा के अनुसार मूल्यों का आदि स्रोत ईश्वर ही है, परन्तु आज मानव का स्वाभाविक रूप उसकी सहजता से ही व्यक्त होता है, इसीलिए मूल्यों का स्रोत साधारण मानव को मानना ही श्रेष्ठ है। मूल्य और संस्कृति पर विचार करते हुए कहा गया है कि मूल्यों के संदर्भ में संस्कृति का विशेष महत्त्व है। लगभग सभी भारतीय एवं पाश्चात्य विचारक मूल्य और संस्कृति में पारस्परिक सम्बन्ध को स्वीकार करते हैं। जीवन–मूल्य की दृष्टि में भारतीय चिन्तक वेदों में पाये गए जीवन–मूल्यों से युक्त मानव के व्यक्तित्व की कल्पना करते हैं, तथा सृष्टि में मानव को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं, चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के द्वारा सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति के बाद व्यक्ति सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त होकर परम आध्यात्मिक शान्ति एवं आनन्द का अनुभव प्राप्त करता है, इसे ही विद्वान जीवन के सच्चे अर्थों में सार्थकता कहते हैं।

पाश्चात्य विद्वान भी जीवन–मूल्य के संदर्भ में अपनी एक दृष्टि रखते हैं समाजशास्त्रीय दृष्टि रखने वाले विद्वान समाज का मनुष्य से घनिष्ठ सम्बन्ध मानते हैं और इसी आधार पर मानव जीवन के विकास में सामाजिक मूल्यों को सहायक मानते हैं। दार्शनिक दृष्टि रखने वाले विद्वान नीति को मानव–जीवन के संयमन एवं नियम हेतु अनिवार्य एवं आवश्यक मानते हैं। इसी के साथ वैज्ञानिक दृष्टि रखने वाले विद्वान कहते हैं कि विज्ञान की प्रगति के साथ–साथ सामाजिक व्यवस्था में भी अनेक परिवर्तन हुए हैं। इन सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जीवन–मूल्यों पर भी पड़ा है।

विद्वानों के अनुसार जीवन–मूल्यों में श्रेणी विभाजन भी पाया जाता है, परन्तु पाश्चात्य विचारकों में Urban के द्वारा किया गया विभाजन अपेक्षाकृत बहुत महत्त्वपूर्ण माना गया है जिनमें शारीरिक जीवन–मूल्य, आर्थिक जीवन–मूल्य, मनोरंजनात्मक जीवन–मूल्य, सामुदायिक जीवन–मूल्य, चारित्रात्मक जीवन–मूल्य, सौन्दर्यात्मक जीवन–मूल्य, बौद्धिक जीवन–मूल्य, धार्मिक जीवन–मूल्य, हैं। इस प्रकार कह सकते हैं कि भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों के जीवन–मूल्य विषयक चिन्तन में कोई विशेष भेद नहीं है परन्तु फिर भी कुछ विद्वानों ने जीवन–मूल्यों का एक और श्रेणी विभाजन शारीरिक जीवन–मूल्य, आर्थिक जीवन–मूल्य, सामाजिक जीवन–मूल्य, मनोवैज्ञानिक जीवन–मूल्य, बौद्धिक जीवन–मूल्य, आध्यात्मिक जीवन–मूल्य के आधार पर किया है।

विद्वान कहते हैं कि जीवन–मूल्य शाश्वत और परिवर्तन शील होते हैं, शाश्वत जीवन मूल्य देशकाल की सीमा से ऊपर उठे हुए हैं। और किन्हीं भी परिस्थितियों में उनके महत्त्व में कोई कमी नहीं आती है। परन्तु परिवर्तनशील जीवन–मूल्य, समय के साथ–साथ बदलते रहते हैं। Kurt Baler भी कहता है कि मानव एवं समाज में परिवर्तन के साथ–साथ जीवन के सभी विश्वासों एवं मूल्यों में परिवर्तन स्वाभाविक है।

मूल्य के परिवर्तन में विद्वान पाँच पद्धतियों को अपनाते हैं, मूल्यों का ग्रहण एवं परित्याग, मूल्यों का पुनर्वितरण, मूल्यों का पुनर्मूल्यांकन, मूल्यों का पुनर्प्रसार, मूल्यों का पुनर्निधारण।

विद्वानों के अनुसार जीवन–मूल्यों को साधन के रूप में स्वीकार किया गया है, और मोक्ष ही जीवन–मूल्यों का सर्वोच्च लक्ष्य है, जीवन–मूल्यों के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है, यह जीवन को व्यवस्थित एवं संतुलित करते हैं जीवन–मूल्य मनुष्य को भाग्यवादी न बनाकर कर्मवादी, निराशावादी न बनाकर आशावादी बनाने की प्रेरणा देते हैं।

द्वितीय अध्याय में कोहली जी के रचना परिवेश एवं जीवन परिचय का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी कोहली जी लेखक बने साहित्यकार बने और अपने इस जीवन में वे पूर्ण सुखी रहें। इस अध्ययन में उनके जन्म के विषय में बताया गया है उनका जन्म 06 फरवरी सन् 1940 ई0 को स्यालकोट (पंजाब) (यह स्थान अब पाकिस्तान में है) में हुआ उनकी माता का नाम विद्यावती व पिता का नाम परमानन्द कोहली था जो मध्यवर्गीय नौकरी पेशा थे, देश विभाजन के समय जमशेदपुर आ गए और पटरी पर बैठकर फल बेचने को बाध्य हुए। विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने अपना अध्ययन कार्य जारी रखा सन् 1947 में देश विभाजन के बाद उनकी पढ़ाई लिखाई पर बुरा असर पड़ा, परन्तु पिता ने उनकी पढ़ाई नहीं रोकी और इसी क्रम में उन्होंने सन् 1963 में एम0ए0 की परीक्षा पास की और 1970 ई0 में पी0–एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की।

कोहली जी ने अपनी आजीविका के लिए अपनी पहली नौकरी पी0 जी0 डी0 ए0 वी0 (संध्या) कॉलेज में हिन्दी के अध्यापक के रूप में सन् 1963 ई0 से 1965 तक की और उसके बाद अपनी दूसरी नौकरी दिल्ली के मोतीलाल नेहरू कॉलेज में 1965 में आरम्भ की और 1 नवम्बर 1995 ई0 को 55 वर्ष की अवस्था में स्वैच्छिक अवकाश लेकर नौकरी का सिलसिला समाप्त कर दिया।

सन् 1965 ई0 में डॉ0 मधुरिमा कोहली के साथ परिणय सूत्र में बंधकर वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन आरम्भ किया। पत्नी ने प्रथम पुत्री संचिता को जन्म दिया परन्तु वह केवल चार माह ही जीवित रही, दिसम्बर 1967 ई0 को दो जुड़वा सन्तानें कार्त्तिकेय व सुरभि का जन्म हुआ परन्तु सुरभि केवल 24 माह ही जीवित रही, सन् 1975 ई0 को छोटे पुत्र अगस्त्य का जन्म हुआ। कार्त्तिकेय कोहली, रामानन्द (संध्या) कॉलेज दिल्ली में अर्थशास्त्र पढ़ा रहे हैं तथा अगस्त्य सियाटल (संयुक्त राज्य अमेरिका) में नेटवर्क इंजीनियर के रूप में सेवारत हैं।

कोहली जी की साहित्य साधना बहुत लम्बी है उनकी लिखने और छपने की इच्छा बचपन से ही थी उन्होंने छठी कक्षा में ही एक

रचना लिखी जो कक्षा की हस्तलिखित पत्रिका में प्रकाशित हुई थी उनके बाद लिखने का सिलसिला चला तो समाप्त ही नहीं हुआ, उन्होंने बहुत से उपन्यास लिखे जिसमें उन्होंने पारिवारिक, राजनीतिक प्राचीन घटनाओं के माध्यम से समाजिक, राजनीतिक व आर्थिक विडम्बनाओं का चित्रण किया गया है उनके द्वारा लिखे गये उपन्यास हैं–महासमर–1 बन्धन, महासमर–2 अधिकार, महासमर–3 कर्म, महासमर–4 धर्म, महासमर–5 अंतराल, महासमर–6 प्रच्छन्न, महासमर–7 प्रत्यक्ष, महासमर–8 निर्बन्ध, दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर, युद्ध (भाग–2) तोड़ो कारा तोड़ो–1, निर्माण, तोड़ो कारा तोड़ो–2, पुनरारंभ, आतंक, साथ सहा गया दुःख, मेरा अपना संसार, जंगल की कहानी, अभिज्ञान, आत्मदान, प्रीतिकथा, क्षमा करना जीजी, अभ्युदय (दो भाग), न भूतो न भविष्यति, वसुदेव, परिव्राजक, तोड़ो कारा तोड़ो–3, निर्देश, तोड़ो कारा तोड़ो–4, कोहली जी ने दो शोध ग्रन्थ भी लिखे तथा बहुत सी बाल कथाएँ भी लिखीं, इसी क्रम में उन्होंने परिणति, कहानी का अभाव, दृष्टि देश में एकाएक, शटल, नमक का कैदी, निचले फ्लैट में, डॉ0 नरेन्द्र कोहली की कहानियाँ, संचित भूख, समग्र कहानियाँ, मेरी तेरह कहानियाँ, व अनेक बाल कथाओं का भी लेखन किया है। इसी प्रकार उन्होंने अनेक व्यंग्य और नाटक, संस्मरण, निबन्ध, समीक्षा लेख आदि की भी रचना की है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि कोहली जी का साहित्य बहुत ही विशाल है। कोहली जी के द्वारा लिखी गयी पुस्तकों को अनेक भाषाओं में अनुवाद भी हो चुके हैं उन्हें अनेक संस्थाओं द्वारा पुरस्कार व सम्मान प्रदान किए गए हैं तथा अनेक साहित्यकारों ने उनके साहित्य पर अनेक पुस्तकों का लेखन भी किया है उनके साहित्य के ऊपर बहुत सी पत्र–पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हो चुकी हैं। डॉ0 नरेन्द्र कोहली साहित्य पर 8 दर्जन से भी अधिक शोध कार्य हो चुके हैं व 4 दर्जन से अधिक शोध कार्य चल रहे हैं। वह हिन्दी साहित्य के शीर्ष पर विराजमान उन अग्रगण्य उपन्यासकारों व साहित्यकारों की प्रथम पंक्ति में अपना अविस्मरणीय स्थान प्राप्त कर चुके हैं, आज न केवल हिन्दी जगत अपितु अन्य भाषा भाषियों में उनकी प्रतिष्ठा पूर्ण रूप से स्थापित हो चुकी है।

साधारण परिवार में जन्म लेकर कोई व्यक्ति साहित्य के शिखर पर कैसे विराजमान होता है इसका उदाहरण कोहली का व्यक्तित्व एवं कृतित्व है। कोहली जी ने जब लेखन को अपना लक्ष्य बनाया तो कभी पश्चताप नहीं किया और न कभी पीछे मुड़ कर देखा उनमें भारतीय संस्कृति का अक्षय स्रोत विद्यमान है, जिसे वे अपनी दिव्य ऊर्जा से लेखनी द्वारा प्रगट करते चले जा रहे हैं।

तृतीय अध्याय में डॉ0 नरेन्द्र कोहली के कृष्ण परक उपन्यासों में समष्टिगत जीवन–मूल्यों के विभिन्न बिन्दुओं के आधार पर परखने और समझने का प्रयास किया गया है। जातिगत जीवन–मूल्यों के संदर्भ में कोहली जी कहते हैं कि व्यक्ति को चाहें वह किसी भी जाति अथवा वर्ग का हो उसे हर एक वर्ग और जाति का सम्मान करना चाहिए उनके कृष्णपरक उपन्यासों में युधिष्ठर को ऐसा ही करते हुए दिखाया गया है वह यह भी कहते हैं कि व्यक्ति अपने कर्मों के द्वारा अपने वर्ण को परिवर्तित कर सकता है, उन्होंने इसके अनेक उदाहरण भी प्रस्तुत किये हैं। समाज में ऐसे भी बहुत से लोग पाये जाते है जिनको जाति से पुकारने पर अपमान महसूस होता है परन्तु यह अपमान और घृणा का भाव व्यक्ति के अपने मन में होता है दूसरे के मन में नहीं।

कोहली जी आज के समाज की इस ज्वलंत समस्या को भी कृष्णपरक उपन्यास में उठाते हैं कि व्यक्ति अपनी जाति को श्रेष्ठ और दूसरे की जाति को निम्न समझता है और उसका अपमान करता है परन्तु वह इस बात पर बल देते हैं कि क्षमता जाति से बढ़ कर होती है, अपनी क्षमता के बल पर ही व्यक्ति अपना और दूसरे का विकास करता है, यदि किसी समाज के भीतर जातीय शोषण अधिक होता है तो समाज के भीतर से शोषण और अपमान के प्रतिशोध के स्वर उभरने लगते हैं।

कोहली जी के कृष्णपरक उपन्यासों में पारिवारिक जीवन–मूल्य भी बहुतायत से आये हैं जिनको पिता–पुत्र विषयक जीवन–मूल्य, बहन–भाई विषयक जीवन–मूल्य, पिता–पुत्री विषयक जीवन–मूल्य, गुरु–शिष्य सम्बन्धी जीवन–मूल्य, गुरु के प्रति अश्रद्धा रखने वाले निकृष्ट पात्रों के जीवन–मूल्य, पति–पत्नी विषयक जीवन–मूल्य पति और प्रेमी सम्बधी सम्बन्धित जीवन–मूल्य, पत्नी के अपमान का प्रतिशोध लेने सम्बन्धी जीवन–मूल्य, संयुक्त परिवार विषयक जीवन–मूल्य में विभाजित करके अध्ययन को ओर भी सरल बनाने का प्रयास किया है।

समष्टिगत जीवन–मूल्य में विवाह सम्बन्धी जीवन–मूल्य का बड़ा महत्व है। कोहली जी कहते हैं कि विवाह जीवन का एक महत्त्वपूर्ण मूल्य है जिसके बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि विवाह सम्बन्धों के बाद एक नयी पीढ़ी का समाज में उदय होता है और पति–पत्नी के समाज के प्रति कुछ दायित्व होते हैं। हर एक व्यक्ति अपनी पुत्री और बहन के लिए धर्म पर चलता हुआ वर चाहते हैं, कोहली जी श्रीकृष्ण को अपनी बहन के विषय में इस बात की चिन्ता करते हुए दिखाते हैं, क्योंकि बहन या पुत्री के विवाह के लिए धन सम्पत्ति से अधिक वर की योग्यता कुलशीलता और उसके आचरण पर ध्यान दिया जाता है।

आज के समय में समाज ने अन्तर्जातीय विवाह को अनुमति तो दे दी है परन्तु कोहली जी इसे उपयुक्त नहीं मानते वह मानते हैं कि अन्तर्जातीय विवाह से परिवार में विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और इसका परिणाम कभी–कभी ही सुखद होता है परन्तु अधिकतर इसका परिणाम दुखद ही होता है और बेमेल विवाह से परिवार की शान्ति भी भंग हो जाती है। कोहली जी कहते हैं कि निर्धनतापूर्ण जीवन यापन कर रहे व्यक्ति को विवाह के बंधन में नहीं बाधना चाहिए साथ ही वह परिवेदन को पाप मानते हैं।

बहु–विवाह सम्बन्धी जीवन–मूल्य पर चर्चा करते हुए वह कहते हैं कि बहु–विवाह का प्रचलन आदि भारतीय समाज में बहुत अधिक था परन्तु बदलते हुए जीवन–मूल्यों के कारण आज के समाज ने बहु–विवाह सम्बन्धी मूल्य को त्याग दिया है।

नारी सम्बन्धी मूल्यों का वर्णन करते हुए कोहली जी कहते हैं कि समाज में नारी और पुरुष दोनों को बराबर अधिकार प्राप्त है। जिस समाज में नारी को सम्मान दिया जाता है उस समाज ने प्रतिष्ठा प्राप्त की, मध्य युग में नारी का अस्तित्त्व बहुत संकुचित हो गया था परन्तु आज के समय में नारी ने अपनी फिर वह खोई प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है। नारी एक ओर दया, ममता और करुणा की प्रतिमूर्ति होती है दूसरी ओर नारी भयंकर कृत्य भी कर सकती है। इसी मूल्य को समझाते हुए अपने कृष्णपरक उपन्यासों में वह कहते हैं कि नारी की कामना कभी पूर्ण नहीं होती, यह उसका दोष नहीं परन्तु सहज रूप है। उसकी प्रकृति पुरुष से भिन्न होती है, वह अपने सौन्दर्य को त्यागना नहीं चाहती, साथ ही वह कहते हैं कि नारी प्रकृति द्वारा सृजित वह व्यक्तित्त्व है जो किसी भी पुरुष को विकास अथवा विनाश की ओर ले जा सकता है। नारीत्व के अपमान का प्रतिशोध ईश्वर अवश्य लेता है। उसे अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए हिंसक होना अपराध नहीं है।

दाम्पत्य सम्बन्धी जीवन–मूल्य को कोहली जी मानव जीवन का एक अति महत्त्वपूर्ण जीवन–मूल्य मानते हैं। इस मूल्य के अभाव में परिवार की स्थापना नहीं हो सकती वह कहते हैं कि पुरुष और स्त्री का मात्र दैहिक आकर्षण कभी भी सुखी दाम्पत्य सम्बन्धों का

आधार नहीं बन सकता । यह शरीर भोग तक सीमित नहीं है यह तो मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है। इसी विषय पर अर्जुन चित्रांगदा से कहता है–पति पत्नी का सम्बन्ध केवल शरीर भोग तक ही सीमित नहीं है, पति–पत्नी के रूप में वे धर्म पूर्वक काम तथा अर्थ का भोग करते हुए मोक्ष को प्राप्त करते हैं। शारीरिक भोग को संतुलित करने के लिए दाम्पत्य–सम्बन्ध अति आवश्यक है। इसमें पति–पत्नी में किसी भी प्रकार का विभाजन नहीं होता, जो कुछ होता है उनका सामूहिक होता है।

धनोपार्जन सम्बन्धी जीवन–मूल्य के विषय में बताते हुए वह कहते हैं कि व्यक्ति को धार्मिक कृत्यों के द्वारा भोजन, वस्त्र आवास की पूर्ति करनी चाहिए। परन्तु आज के समय में संसार का सारा व्यापार अर्थ के आधार पर चलता है। आज ज्ञान, पुण्य आदर्श का कोई स्थान नहीं है। परन्तु कोहली जी कहते हैं कि धनोपार्जन का आधार केवल धार्मिक होना चाहिए, धर्म से शून्य धन केवल पाप को प्रोत्साहित करता है जो मानव समाज के लिए घातक है।

राज्य को भी धनोपार्जन जनता का शोषण करके नहीं वरन विकास का मार्ग अपना कर किया जाना चाहिए। क्योंकि अधर्म से अर्जित किया गया धन कभी भी समाज और व्यक्ति का विकास नहीं कर सकता। कोहली जी कहते हैं कि जो व्यक्ति लोगों का अहित कर धनोपार्जन करता है वह दस्यु के समान है। मनुष्य के लिए धनोपार्जन का माध्यम केवल धर्म पर आधारित होना चाहिए। व्यक्ति को कभी भी दूसरे का वैभव देखकर जलना नहीं चाहिए परन्तु स्वयं भी धनोपार्जन का प्रयास करना चाहिए।

अहिंसा सम्बन्धी जीवन–मूल्य की चर्चा करते हुए कोहली जी कहते हैं कि व्यक्ति को हिंसा का मार्ग छोड़कर अहिंसा का मार्ग अपनाना चाहिए, उसे करुणा जन्य व्यवहार के प्रति आग्रहशील होना चाहिए। कोहली जी अनावश्यक रक्तपात को हिंसा और क्रूरता कह कर उसका विरोध करते हैं साथ ही कहते हैं कि जो व्यक्ति अनावश्यक रक्त–पात करता है वह विनाश को प्राप्त होता है। परन्तु मानवता से प्रेम करने वाला धर्मात्मा व्यक्ति हिंसा और प्रतिहिंसा का विकास नहीं होने देना चाहता । वह चाहता है कि संसार निर्भय हो उसमें केवल अहिंसा और शान्ति स्थापित हो। कोहली जी के सभी आदर्श पात्र हिंसा को पाप और मानवता के लिए खतरा बताते हैं परन्तु साथ ही वह यह भी कहते हैं कि अपने अधिकार के लिए युद्ध करना पाप नहीं वह मुनि शालिहोत्र के माध्यम से कहते है–अधर्मियों के प्रति दयावान होने का अर्थ है उनके प्रति तथा सामान्य जनता के प्रति नृशंस होना।

त्याग सम्बन्धी जीवन–मूल्य को भी कोहली जी मानव जीवन का महत्त्वपूर्ण मूल्य मानते हैं। वह कहते हैं कि दूसरे के लिए सब कुछ त्यागने वाला व्यक्ति अधिक सुखी होता है। पारिवारिक शान्ति के लिए आदर्श मूल्य धारण किया हुआ धर्मात्मा व्यक्ति अपना सब कुछ त्याग देने के लिए तत्पर रहता है; शत्रु भी ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा करता है। वह कहते हैं जीवन में कामना का त्याग ही सुख का आधार है। मनुष्य यदि संसार को, सुख भोगों को, धन सम्पत्ति को प्राप्त करना चाहता है तो उसे ईश्वर का त्याग करना पड़ेगा, यदि उसे ईश्वर चाहिए तो संसार और सांसारिक वस्तुओं को त्यागना पड़ेगा। कोहली जी ने इस मूल्य को भी एक आदर्श जीवन–मूल्य के व्यापक स्तर पर स्वीकार किया है।

मैत्रीगत मूल्य को भी कोहली जी समष्टि का एक आदर्श मूल्य मानते हैं वह कहते हैं कि इसके अभाव में किसी भी व्यक्ति के सामाजिक–मूल्य की कल्पना अधूरी रह जाएगी क्योंकि आदर्श चरित्र धारण किए हुए व्यक्ति की मित्रता धर्म से होती है, धर्मी और सच्चे मित्र का चुनाव कोई भी मूल्य देकर किया जाता है। संसार को पाने मात्र के लिए उसे त्यागा नहीं जा सकता, एक सच्चा मित्र अपने मित्र के लिए बड़े से बड़ा त्याग कर सकता है, आदर्श व्यक्ति की मित्रता में कोई रक्त सम्बन्ध निश्चित नहीं होता, उसकी मित्रता निस्वार्थ भावना से प्रेरित होती है। मैत्री में कोई औपचारिकता नहीं होती परन्तु आज का स्वार्थी समाज मित्रता का निर्धारण समानता के आधार पर करता है। धनी व्यक्ति अपने लाभ के लिए केवल धनी व्यक्ति को ही अपना मित्र बनाना चाहता है इन्ही सब मैत्रीगत जीवन–मूल्यों का वर्णन किया है कोहली जी ने अपने कृष्णपरक उपन्यासों में।

राष्ट्रनिष्ठा सम्बन्धी जीवन–मूल्यों का वर्णन करते हुए कोहली जी कहते हैं कि यह मूल्य किसी भी राष्ट्र के व्यक्ति का एक अति महत्त्वपूर्ण मूल्य है। इसमें मातृभूमि के लिए आत्म त्याग एवं उत्सर्ग का भाव सर्वत्र देखा जा सकता है । उनके अनेक आदर्श पात्र, त्याग, एकता एवं राष्ट्र के लिए आत्मोत्सर्ग की भावना लिए हुए हैं। कोहली जी ने अपनी रचना प्रक्रिया में सर्वत्र राष्ट्रीय भावना को मानव चेतना में स्फूर्त रूप से भरने का प्रयत्न किया है। उन्होंने यह प्रमाणित किया है कि व्यक्ति का अपने राष्ट्र के प्रति एक महत्त्वपूर्ण दायित्त्व होता है और उसके लिए उसे अपने सर्वस्व त्याग एवं आत्मोत्सर्ग के लिए सदैव जागरूक रहना चाहिए कोहली जी के सभी आदर्श पात्र राष्ट्र निष्ठा की भावना से ओत प्रोत हैं।

मानवतावादी जीवन–मूल्य भी मानव जीवन का एक उत्कृष्ट मूल्य है। कोहली जी ने इस मूल्य के माध्यम से एक आदर्श समाज की स्थापना करने का प्रयत्न किया है। इस मूल्य को धारण किया हुआ व्यक्ति कभी भी किसी को भी अपना शत्रु नहीं समझता, उसके मन में किसी के लिए भी ईर्ष्या–द्वेष की भावना नहीं होती इसी संदर्भ में अर्जुन द्रोण से कहता है – हमें तो शतशृंग के आचार्यों ने यह आदेश दिया था कि हम अपने मन में किसी के लिए भी वैर, द्वेष ईर्ष्या तथा द्रोह जैसे भाव न रखें।

मानवतावादी का कर्म, स्वार्थ से नहीं धर्म से प्रेरित होता है उसके मन में संसार का लाभ देख कर भी लोभ नहीं जागता, ईर्ष्या, द्वेष, स्पर्धा, आदि निकृष्ट भावों से तो उसका परिचय तक नहीं होता। इन्हीं मानवतावादी मूल्यों का वर्णन किया है कोहली जी ने अपने कृष्णपरक उपन्यासों में। दया सम्बन्धी जीवन–मूल्यों का वर्णन करते हुए वह कहते हैं कि दया सम्बन्धी मूल्य भी मानव जीवन में बहुत अधिक स्थान रखता है। उनके सभी आदर्श पात्र दया की भावना का प्रचार–प्रसार करना चाहते हैं। उन्होंने युधिष्ठिर को दया की प्रतिमूर्ति बताया है युधिष्ठिर बड़े से बड़े अपराधी को भी क्षमा करने का हृदय रखते हैं। ऐसे दयावान व्यक्ति की हर ओर प्रशंसा होती है। कोहली जी जहाँ दया को मानव जीवन का एक आदर्श मूल्य बताते हैं वहीं वह दुष्ट व्यक्ति पर दया करना पाप ही नहीं जघन्य अपराध भी मानते हैं। इसी संदर्भ में मुनि शालिहोत्र युधिष्ठिर से कहते हैं – अधर्मियों के प्रति दयावान होने का अर्थ है उनके प्रति तथा सामान्य समाज के प्रति नृशंस होना । कोहली जी दुष्ट के प्रति दया की भावना की निन्दा करते हैं और कहते हैं कि दुष्चरित्र को अवश्य ही दण्डित किया जाना चाहिए।

क्षमा सम्बन्धी जीवन–मूल्य को भी विद्वानों ने एक अति विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण जीवन–मूल्य स्वीकार किया है यह एक सुखात्मक भाव है। किसी व्यक्ति के अपराध क्षमा करने के बाद हमें सुख का अनुभव होता है। क्षमा मनुष्य को क्रोध प्रतिहिंसा तथा घृणा के पक्ष से हटाकर उदात्त स्थिति में पहुँचाती है। विश्व कल्याण के लिए क्षमा एक मंगलकारी तत्त्व है। कोहली जी के आदर्श पात्र युधिष्ठिर में तो इस मूल्य का भाव इतना प्रबल है कि वह अपनी पत्नी के अपहरणकर्ता के अक्षम्य अपराध को भी क्षमा करके उसे मुक्त कर देते हैं साथ ही वह अपने पुत्रों के हत्यारे अश्वत्थामा को भी क्षमा करने की क्षमता रखते हैं। क्षमाशील व्यक्ति के सानिध्य में रहने से

दूसरे व्यक्ति के जीवन में क्षमा का भाव उदय हो जाता है। द्रौपदी में इस भाव के उदय होने के कारण भीम सोचता है – भीम को बहुत कष्ट हुआ कि धर्मराज की क्षमा का यह रोग द्रोपदी में भी क्यों लग गया? इस प्रकार कह सकते हैं कि कोहली जी ने अपने कृष्णपरक उपन्यासों में सभी समष्टिगत मूल्यों को समझाने का प्रयास किया है।

चतुर्थ अध्याय में डॉ0 नरेन्द्र कोहली के कृष्णपरक उपन्यासों में व्यष्टिगत जीवन–मूल्य को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। वह नैतिकतावादी जीवन–मूल्य के विषय में कहते हैं कि यह मूल्य परिवार के साथ–साथ सामाजिक एवं राजनीतिक स्तर पर भी अपनी एक भूमिका रखता है उनके कृष्णपरक उपन्यासों में नैतिकतावादी मूल्य बहुतायता से दृष्टिगत होते रहते हैं उनके अनुसार मानव को राजनीतिगत स्वार्थ में फँस कर इस पवित्र धर्म की उपेक्षा कदापि नहीं करनी चाहिए। नैतिकतावादी अनासक्त होता है, वह दूसरे के सुख के लिए अपना सुख सहजता से त्याग सकता है। नैतिकता सदा ही हर एक अनैतिक कार्य का विरोध करती है, नैतिकता का अनुसरण करने वाले माता–पिता अपने बालकों को सदा ही अनैतिकता से दूर रह कर नैतिकता पर चलने की शिक्षा देते हैं कुन्ती भी अपने पुत्रों को समझाते हुए कहती है – सदा नीति और न्याय पर चलो पुत्रों! यहीं तुम्हारा शाश्वत धर्म है। लोभ और भय के कारण सत्य पथ से विचलित मत होना ..... अपने स्वार्थ के लिए, अपनी सुविधा के लिए न दूसरे की सुख–सुविधा छीनना न किसी के नैतिक कार्य का हनन करना।

नैतिकतावादी के जीवन में एक समय ऐसा भी आता है जब वह नैतिकता और अनैतिकता के भंवर में डूबने उतराने लगता उसकी समझ में ही नहीं आता कि वह नैतिकता का अनुसरण करे अथवा अनैतिकता का। इन्हीं सब मूल्यों को उकेरा है कोहली जी ने अपने कृष्णपरक उपन्यासों में, उनके स्वर नैतिकता को लेकर कहीं–कहीं उग्र भी हुए हैं वह नैतिकता का विरोध करते हुए भी दिखाई देते हैं क्योंकि नैतिकतावादी व्यक्ति को दुःख पीड़ा और यातना भी सहना पड़ता है। वह अनीतिपूर्ण शासन व्यवस्था पर भी व्यंग्य करते हुए दिखाई देते हैं।

व्यक्ति स्वातंत्र्य सम्बन्धी जीवन–मूल्य पर अपने विचार रखते हुए वह कहते हैं कि यह मूल्य व्यक्ति के स्वाभाविक विकास के लिए अति आवश्यक है उन्होंने मानव जीवन के कल्याणार्थ इस मूल्य की महत्ता स्वीकार की है, क्योंकि मानव स्वभाव से ही स्वतंत्रता का आग्रही है। परन्तु समाज में ऐसे व्यक्ति भी पाये जाते हैं जो अपनी व्यक्ति स्वतंत्रता से दूसरे व्यक्ति की व्यक्ति स्वतंत्रता को भी वाधित करते हैं, परन्तु आत्मस्वाभिमानी व्यक्ति सदा ही स्वतंत्र होता है, उसे कोई परतंत्र नहीं कर सकता, कोई बंदी नहीं बना सकता।

आदर्श मूल्य धारण किया हुआ व्यक्ति कभी भी किसी व्यक्ति की व्यक्ति स्वतंत्रता का अतिक्रमण नहीं करता और जो व्यक्ति ऐसा करता है उसका साथ उसका उच्च चरित्र वाला भाई भी नहीं देता। कोहली जी के स्वर इस बात को लेकर भी उभरे हैं कि कभी–कभी व्यक्ति इतना असहाय हो जाता है कि उसे अपनी व्यक्ति स्वतंत्रता के ऊपर से विश्वास उठ जाता है।

कोहली जी कहते हैं कि स्वच्छन्दता की स्थिति बहुत ही भयानक है, कभी–कभी मनुष्य, व्यक्ति स्वतन्त्र्य के कारण स्वच्छन्द हो जाते हैं वह कहते है कि कंस के दमन के पश्चात् यादव स्वच्छन्द हो गये, शिशुपाल अपनी स्वच्छन्दता के कारण ही पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में उनकी स्वतंत्रता का हनन करता है परन्तु स्वच्छन्दता कभी भी समाज और व्यक्ति के हितकर नहीं होती।

प्रेम सम्बन्धी जीवन–मूल्य भी मानव जीवन का एक अति महत्त्वपूर्ण जीवन–मूल्य है यह जीवन के सर्वागों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। यह जीवन की पूर्णता का प्रतीक है मनुष्य को सुख प्रेम से ही प्राप्त होता है असक्ति से नहीं, एक सच्चा प्रेमी अपनी प्रिया के लिए कुछ भी कर सकता है, परन्तु संसार में बहुत से लोग नारी आसक्ति को ही प्रेम मान लेते हैं परन्तु यह नारी के प्रति प्रेम नहीं लोलुपता होती है, लोलुपता जीवन को कभी सुखी नहीं रख सकती। अधर्मी व्यक्ति किसी से भी प्रेम नहीं कर सकता है वह प्रेम का ढोंग अवश्य कर सकता है। प्रेम को कभी संकीर्ण नहीं बनाना चाहिए अन्यथा व्यक्ति का विकास रुक जाता है और प्रेम का विस्तार नहीं हो पाता। परिवार के वृद्ध लोग भी चाहते हैं उनके सन्तानें प्रेम पूर्वक स्नेह से एक दूसरे के साथ रहें। परन्तु जब वे परिवार में प्रेम और भाईचारे के स्थान पर शत्रुता की फसल उगते देखते हैं तो उनका हृदय पीड़ित हो उठता है। कोहली जी, प्रेम को पथिक के लिए अंधकार में एक टिमटिमाती ज्योति के समान मानते हैं, यह आशारहित व्यक्ति के जीवन की एक नयी आशा है।

सौन्दर्य सम्बन्धी जीवन–मूल्य की चर्चा करते हुए कोहली जी इसे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण मूल्य मानते हैं, यह मानव जीवन के लिए प्रकृति का एक महान वरदान है मनुष्य, धन, सम्पत्ति, सत्ता, वैभव, वृद्धि और पराक्रम अपने कर्म से प्राप्त कर सकता है, किन्तु सौन्दर्य तो सम्पूर्ण संसार के लिए एक ईश्वरीय वरदान है, इसे मनुष्य धन सम्पत्ति और सत्ता के द्वारा प्राप्त नहीं कर सकता, यह तो मानव के लिए ईश्वर का अनुपम उपहार है। इसे हम निश्छल मन से ही देख सकते हैं। वास्तव में जिस व्यक्ति के जीवन में प्रेम, सेवा एवं मानव–कल्याण की भावना पायी जाती है वह सौन्दर्य के आदर्श रूप को देखने में सक्षम है और दूसरा कोई नहीं। परन्तु अविवेकी पुरुष नारी सौन्दर्य के सामने अपना विवेक खो बैठता है। कुछ लोग तो नारी सौन्दर्य के प्रति इतने आसक्त होते हैं कि नारी के सामने अपने आप को उसका दास ही बना लेते हैं। सौन्दर्य एक ऐसा भाव है जो हर व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है कोहली जी ने अपने कृष्णपरक उपन्यासों में नारी सौन्दर्य के साथ–साथ प्राकृतिक सौन्दर्य का भी चित्रण किया है वह कहते हैं कि प्रकृति माँ के समान होती है वह अपने आप को स्वयं ही सुन्दर बना लेती है। वह मानते हैं कि अराधनालयों से भरे सात्विक स्थानों में भी सौन्दर्य के दर्शन होते हैं, उनका सौन्दर्य अलौकिक होता है। आज मनुष्य कृत्रिम सौन्दर्य का निर्माण कर रहा है परन्तु उस सौन्दर्य से वास्तविक सौन्दर्य के गुण तो जैसे कहीं खो जाते हैं। प्राकृतिक में एक अलग ही गुण होता है, उस गुण को हम कभी कृत्रिमता से प्राप्त नहीं कर सकते।

इन्द्रिय सम्बन्धी जीवन–मूल्य की चर्चा करते हुए कोहली जी कहते हैं कि मानव जीवन को सुखी और शान्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए इन्द्रिय निग्रह अति आवश्यक है परन्तु इन्द्रियों को वश में करना कोई साधारण कार्य नहीं है, क्योंकि बड़े–बड़े साधकों को भी इनमें नियन्त्रण कर पाना कठिन लगता है। जो व्यक्ति इन्द्रिय सुख पाने के लिए इसमें फंसता है अवश्य ही नाश को प्राप्त होता है, इसी संदर्भ में सोचते हैं देवव्रत– उन्होंने नहीं देखा कि यह आकर्षण प्रेम नहीं है, यह विवेक की हत्या है, यह मोहासक्ति का जाल है, जो व्यक्ति केवल इन्द्रिय सुख को ही सुख मानता है उसके जीवन से विद्या, ज्ञान, तपस्या तथा वरिष्ठ का सम्मान समाप्त हो जाता है। यदि व्यक्ति की इन्द्रियाँ स्वतंत्र हो जाए तो ऐसा व्यक्ति किसी का भी अनिष्ट कर सकता है इन्द्रियों के प्रति असक्त व्यक्ति विलास प्रवृत्ति को ही उचित मानता है, यदि व्यक्ति को जीतना है तो उसे अपनी इन्द्रियों को जीतना चाहिए।

कोहली जी यह भी कहते हैं कि संसार के बड़े–बड़े तपस्वी और ज्ञानी व्यक्ति भी अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं रख पायें परन्तु मनुष्य के लिए इन्द्रिय निग्रह करना बहुत ही आवश्यक है इन्द्रिय

निग्रह करने वाला व्यक्ति अप्सरा की काम याचना को भी अस्वीकार कर देता है, कोहली जी इस बात पर भी बल देते हैं कि व्यक्ति को कभी इन्द्रिय निग्रह करने के लिए, अपने आप को कष्ट नहीं देना चाहिए इन्द्रियों का दमन नहीं करना चाहिए, ऐसा करने से इन्द्रियाँ और अधिक भोग और विलास की ओर भागेंगी।

सत्यवादी जीवन–मूल्य के विषय में कोहली जी कहते हैं कि यह मूल्य जीवन के सबसे उत्कृष्ट मूल्यों की श्रेणी में आता है, इस मूल्य को सभी धर्मो, विद्वानों मनीषियों आदि ने बहुत अधिक प्रतिष्ठा दी है। उनका आदर्श पात्र युधिष्ठिर तो जैसे सत्य की प्रतिमूर्ति है। उन्होंने सत्य को अपने कृष्णपरक उपन्यासों में अनेक रूपों में रूपायित किया है। उनके आदर्श पात्र अपने द्वारा दिये गये सत्य वचनों को कभी तोड़ना नहीं चाहते, चाहें उसके लिए उन्हें कोई भी मूल्य क्यों न चुकाना पड़े, मानव के लिए यह अच्छा है कि वह असत्य और दम्भ भरे जीवन जीने के स्थान पर सत्यपूर्ण जीवन व्यतीत करे। एक माता अपने पुत्र को सदा सत्य पर चलने की और सत्य भाषण करने की शिक्षा देती है चाहे इससे किसी को पीड़ा ही क्यों न पहुँचे यह धन, सम्पत्ति से भी अधिक मूल्यवान होता है। परन्तु मानव जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ भी आती है और उसके मन में यही ऊहापोह रहता है कि वह सत्य भाषण करे अथवा असत्य, परन्तु सत्य पुरुष विपत्ति के समय में भी असत्य भाषण नहीं करता। वह धर्म की रक्षा के लिए छद्म का सहारा तो लेता है, परन्तु फिर भी वह असत्य भाषण से बचता है। उसका मन असत्य भाषण के विचार से ही काँप उठता है। ऐसे व्यक्ति को सदा ही विजय प्राप्त होती है, परन्तु असत्य पर चलने वाला व्यक्ति कभी भी विजय को प्राप्त नहीं कर सकता, वह अपना विकास नहीं कर सकता परन्तु भ्रष्ट समाज में सत्य और धर्म का विवेचन किसी को प्रिय नहीं होता, साथ ही प्रतिहिंसा से भरे हुए व्यक्ति को असत्य भाषण करने में कोई संकोच नहीं होता।

स्वाभिमान सम्बन्धी जीवन–मूल्य भी मानव जीवन का एक उत्कृष्ट मूल्य हैं, कोहली जी ने भी स्वाभिमान की मूल्यवत्ता को स्वीकार किया है। स्वाभिमान का यह आदर्श भाव मात्र महान व्यक्तियों में ही नहीं होता। बल्कि जिन्हें हम पद दलित एवं भिखारी कहकर उपेक्षित भाव से देखते हैं वे भी इससे रहित नहीं है। असहाय और निर्बल व्यक्ति का भी अपना एक स्वाभिमान होता है, और वह अपने स्वाभिमान की रक्षा अन्त तक करता है। आदर्श एवं स्वाभिमानी व्यक्ति सदा अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए प्रयत्नशील होता है, साथ ही वह अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए कुछ भी कर सकता है। कोहली जी ने आदर्श सम्राट, आदर्श पत्नी, आदर्श पति, आदर्श भाई, आदर्श पुत्र आदि के स्वाभिमान सम्बन्धी जीवन–मूल्य का विवेचन अपने कृष्णपरक उपन्यासों में किया है।

काम–सम्बन्धी जीवन–मूल्य के विषय में बताते हुए कोहली जी कहते हैं कि यह मानव जीवन के लिए एक अति महत्त्वपूर्ण जीवन–मूल्य है। गृहस्थाश्रम में सर्वप्रथम आकर वह अर्थ संचय करता है और साथ ही विवाह संस्कार के बाद सुखी दाम्पत्य–जीवन व्यतीत करता है। धर्म, अर्थ, एवं मोक्ष से इसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। 'काम' ही इस सृष्टि की उत्पत्ति का मूल स्रोत है। परन्तु काम का अति सेवन अहितकर ही नहीं मृत्यु की प्राप्ति है साथ ही नियम में बंध कर किया गया काम सेवन मानव जीवन के लिए अति उत्तम एवं हितकर है।

एक आदर्श एवं इन्द्रिय निग्रह करने वाला व्यक्ति किसी भी स्त्री के कामाह्वान को स्वीकार नहीं करता। जो व्यक्ति काम को जीत लेता है वह आत्मजयी हो जाता है, और यदि कोई परस्त्री गामी पुरुष किसी चरित्रवान स्त्री के साथ बलात् काम–सम्बन्ध बनाने का प्रयास करता है तो वह अवश्य ही मृत्यु को प्राप्त होता है। साथ ही काम के वशीभूत बनाया गया दाम्पत्य सम्बन्ध किसी को भी सुखी नहीं रख सकता है। कामना अंधी होती है वह कुछ देखती समझती नहीं उसके कारण व्यक्ति का विवेक नष्ट हो जाता है वह न तो समाजिक है और न मानवीय उसकी कोई सीमा नहीं है कोई मर्यादा नहीं है उसके लिए कोई समाज नहीं है, कोई सम्बन्ध नहीं है। परन्तु नियम में बंध कर किये गये काम सेवन के द्वारा इहलोक की ही नहीं परलोक की भी प्राप्ति होती है।

दायित्त्व सम्बन्धी जीवन–मूल्य भी मानव का अति उत्कृष्ट जीवन–मूल्य है। यह जीवन–मूल्य हमें एक दूसरे के प्रति आवश्यक बनाता है। मानव समाज में हर एक व्यक्ति का एक दूसरे के प्रति एक दायित्त्व होता है। कोहली जी के आदर्श पात्र भी अपने–अपने दायित्त्व निर्वाह में तत्पर दिखाई देते हैं वह अपने दायित्त्व के लिए अपना सब कुछ त्यागने के लिए तत्पर हैं। छोटा बालक अभिमन्यु तो एक पुत्र का दायित्त्व निभाते हुए बलिदान हो जाता है, कोहली जी ने अपने कृष्णपरक उपन्यासों में पिता के दायित्त्व, पुत्र के दायित्त्व, पुत्री के दायित्त्व, गुरु के दायित्त्व, शिष्य के दायित्त्व, पति व पत्नी के दायित्त्व, माता के दायित्त्व, भाई–बहन के दायित्त्व, राजा के दायित्त्व, स्वामी और दासी के दायित्त्व, आदि को बड़ी उदात्तता से चित्रित किया है।

ईमानदारी के जीवन–मूल्य का वर्णन करते हुए कोहली जी इसे मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण मूल्य मानते हैं। वह कहते हैं कि इसे जीवन में उतार लेने पर जीवन की सार्थकता पूर्ण हो जाती है। जिन व्यक्तियों में ईमानदारी से काम करने की आदत होती है वे विपरीत परिस्थितियों में भी इसे नहीं भूलते और ईमानदारी से अपने विकास का मार्ग ढूँढ ही लेते हैं। आदर्श व्यक्ति ईमानदारी से ही अपनी आय कमाना चाहता है, बेईमानी से कमाए गए धन को वह कभी स्वीकार नहीं करता, कोहली जी ने कृष्णपरक उपन्यासों में एक आदर्श पुत्र अपने पिता के प्रति, एक पत्नी अपने पति के प्रति, पति अपनी पत्नी के प्रति पूर्ण ईमानदार दिखाई देता है। उदात्त जीवन–मूल्य धारण किया हुआ व्यक्ति अपने सभी सबन्धों को बड़ी ईमानदारी से निभाता है। कोहली जी कहते हैं कि एक स्त्री को अपनी ससुराल के प्रति ईमानदार होना चाहिए कृपी इसी ईमानदारी के विषय में कहती है अपने भाई कृपाचार्य से – जब तक मैं मायके में थी, मायके की थी, विवाह हो गया तो ससुराल की हो गयी, अर्थात् उनकी हो गयी अतः अब मायके लौटने का कोई अर्थ नहीं था। कृष्णपरक उपन्यासों में ऐसे भी बहुत से पात्रों की चर्चा कोहली जी करते हैं जो अपने सम्बन्धों के प्रति ईमानदार नहीं होते। वह कहते हैं जो व्यक्ति बेईमानी से कुछ प्राप्त करता है उसे अपमानित होना पड़ता है, और जो कुछ भी उसने बेईमानी से प्राप्त किया है, वह उससे छिन जाता है। जो व्यक्ति अपनी किसी जिम्मेदारी का निर्वाह पूर्ण ईमानदारी के साथ नहीं करता, ऐसे व्यक्ति को और उसके परिवार को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बेईमान व्यक्ति अपने ही सम्बन्ध के लिए ईमानदार नहीं होते, वे अपने स्वार्थवश किसी भी सम्बन्ध को त्याग सकते हैं।

पंचम अध्याय में डॉ0 नरेन्द्र कोहली के कृष्णपरक उपन्यासों में भौतिक जीवन–मूल्यों का अनुसंधान किया गया है। इस मूल्य के अभाव में व्यक्ति की सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकती। भौतिक जीवन–मूल्य, सामाजिक व आध्यात्मिक मूल्यों का साधन–मूल्य होने के साथ–साथ सामाजिक प्रतिष्ठा एवं ऐश्वर्य का हेतु भी हैं, आधुनिक समय में भौतिकता के अभाव में व्यक्ति को हेय दृष्टि से देखा जाता है। परन्तु कुछ विद्वानों का मत है कि भौतिकता सभ्य समाज के लिए अभिशाप है। जिसने सामाजिक मूल्यों को समाप्त कर दिया है। भौतिकता के प्रभाव के कारण मानव निष्कृष्ट से निष्कृष्ट कार्य करने से भी नहीं चूकते। भौतिकता में

जीने वाले व्यक्ति नितान्त वैयक्तिक स्तर पर ही जीवन जीते हैं और अपने व्यक्तिगत भौतिक उपलब्धियों को ही विशेष महत्त्व देते हैं। परन्तु कोहली जी मानव जीवन के विकास के लिए धर्म पर आधारित भौतिक–मूल्यों की मूल्यवत्ता स्वीकार करते हैं और चाहते हैं कि भौतिक सुखों की ओर भाग रहे मानव को एक पल ठहर कर अपने जीवन के यथार्थ के बारे में सोचना चाहिए, अर्थ सम्बन्धी जीवन मूल्य की चर्चा करते हुए वह कहते हैं कि संसार के सुखोपभोग की प्रत्येक वस्तु धन से क्रय की जा सकती है, अर्थ के अभाव में व्यक्ति भौतिक सुखों से वंचित रह जाता है, लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मनुष्य अपनी मनुष्यता ही त्याग दे और केवल धन संचय करता रहे। भौतिकवाद के कारण ही आज संयुक्त परिवार विघटित होने लगे हैं। परन्तु कोहली जी कहते हैं कि आदर्श और समाजसेवी व्यक्ति के जीवन में धन और धनार्जन कोई महत्त्व नहीं रखता वह तो केवल समाज सेवा से ही प्रसन्न होता रहता है। धार्मिक व्यक्ति केवल धर्म के द्वारा धनार्जन करता है अधर्म से प्राप्त धन को वह कभी स्वीकार नहीं करता। युधिष्ठिर के इसी गुण के विषय में कहते हैं कृष्ण कौरवों की सभा में–धर्मराज अधर्म से मिला हुआ इन्द्र का राज्य भी नहीं चाहते। क्योंकि धन सम्पत्ति कभी भी सुख का आधार नहीं होती परन्तु आर्थिक रूप से समृद्ध, सशक्त और सामर्थ्यवान होकर व्यक्ति धर्म और अधर्म का भेद भुला देता है, परन्तु धन के प्रति अनासक्त ज्ञान, तपस्वी और विवेकशील व्यक्ति को अर्थ का ऐश्वर्य छूता तक नहीं। कोहली जी यह भी कहने से चूके नहीं है कि व्यक्ति को जीवन यापन के लिए धन की आवश्यकता होती है इसलिए उससे धनार्जन करना ही चाहिए अन्यथा उसे और उसके परिवार को दुःख और पीड़ा उठानी पड़ती है। उसे बहुत अधिक सन्तोषी भी नहीं हो जाना चाहिए धन के प्रति उदासीनता अच्छी नहीं होती क्योंकि अर्थविहीन व्यक्ति और उसके परिवार को मित्रों और समाज के द्वारा अपमानित होना पड़ता है। परन्तु व्यक्ति को धनार्जन धर्म के मार्ग पर चलकर ही करना चाहिए।

श्रम निष्ठावादी जीवन–मूल्य के संदर्भ में कोहली जी कहते हैं कि व्यक्ति को भाग्य या नियति के प्रपंच में न फँस कर अदृष्ट की चिन्ता किये बिना श्रम करते रहना चाहिए क्योंकि श्रम निष्ठावान व्यक्ति में स्वाभिमान की भावना के साथ–साथ स्वावलम्बन की क्षमता होती है तभी तो वह सदैव अपने कर्त्तव्य–पालन में जुटा रहता है। अपने श्रम के बल पर ही अर्जुन, आचार्य द्रोण का प्रिय शिष्य बन सका तथा एकलव्य भी अपने अभ्यास और श्रम के द्वारा धनुर्वेद की सभी विद्याएँ प्राप्त कर लेता है। जो व्यक्ति जितना श्रम निष्ठावादी होगा उसे उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त होगी ऐसा व्यक्ति अपना विकास स्वयं कर लेता है। श्रम निष्ठावादी व्यक्ति का समाज में सम्मान होता है। ऐसे व्यक्ति जो बिना श्रम किए झूठ, छल और षडयन्त्र से अपने अभीष्ट को प्राप्त करने का प्रयास करता है, उसे अपमानित और वंचित ही होना पड़ता है। इसलिए व्यक्ति को सदा ही श्रम निष्ठावादी होना चाहिए भाग्यवादी नहीं।

सुखवादी जीवन–मूल्य के विषय में कोहली जी कहते हैं कि यह मानव जीवन में बहुत अधिक स्थान रखता है इसके अभाव में व्यक्ति का जीवन नीरस हो जाएगा। कोहली जी के आदर्श मूल्य धारण किए हुए पात्र त्याग को ही सुख समझते हैं। उसकी धन, सम्पत्ति, वैभव, विलास में असक्ति नहीं होती, वह अपने परिवार और समाज के सुख के लिए अपने सभी सुखों को त्याग सकता है, आदर्श पात्र अपने जीने को सुख नहीं वरन् दूसरे के लिए समाज के लिए परिवार के लिए जीने को सुख मानते हैं। ऐसा व्यक्ति सन्तोषी होता है वह कैसी भी परिस्थितियों में सुखी रह सकता है। पुण्यात्मा संसार में सुख भोगने नहीं आता, वह तो केवल अपना कर्म करने आता है और कर्म कर के चला जाता है। परन्तु आधुनिक मानव वैभव, भोग, विलास और सुविधाओं को ही सुख मानता है। धन, सम्पत्ति, वैभव, विलास काम, सुख नहीं है। यह तो केवल तृष्णा है, प्रकृति का प्रपंच है, जो भी इसमें फँसता है वह नाश हो जाता है। यह तृष्णा सुख नहीं देती, परन्तु दुःख में फंसाती चली जाती है। मूल्यों में आ रहे परिवर्तन के कारण लोग सुख और सन्तोष से दूर होकर लोभ, धन, सम्पत्ति और वैभव, विलास की ओर भागे चले जा रहे हैं। जबकि भौतिक सुख जीवन का अन्तिम लक्ष्य नहीं है। सात्विकता धर्म में सदा ही सुख की अनुभूति होती है। उसमें सुविधाएँ भले ही न हों परन्तु मन को शान्ति प्राप्त होती है।

मनोरजंन सम्बन्धी जीवन–मूल्य के विषय में कोहली जी कहते हैं कि प्राचीन काल से ही इस जीवन–मूल्य का विशेष महत्त्व रहा है, यह एक ऐसी क्रिया है जिसमें सम्मिलित होने वाले को सुख और आनन्द की अनुभूति होती है और मन को शान्ति प्राप्त होती है कोहली जी ने अपने कृष्णपरक उपन्यासों में कहीं–कहीं इस मूल्य का वर्णन किया है वह कहते हैं कि व्यक्ति को अच्छे साधनों के द्वारा ही मनोरंजन करना चाहिए, जिससे समाज का विकास सुनिश्चित हो सके। वह कहते हैं कि खेल भी एक ऐसा मनोरंजन है जिसके द्वारा समाज में आपसी सौहार्द्र बढ़ता है तथा एकता की भावना का विकास होता है। परन्तु निकृष्ट मूल्य धारण किये हुए लोग अनुचित साधनों के द्वारा मनोरंजन करना चाहते हैं ऐसे व्यक्ति मनोरंजन के साधनों का प्रयोग अपने सुख के लिए नहीं वरन् अपने शत्रु को दुःख पीड़ा तथा हानि पहुँचाने के लिए करते हैं। मनोरंजन के निकृष्ट साधनों के प्रयोग द्वारा नगर और समाज की सात्त्विकता नष्ट हो जाती है।

कोहली जी जहाँ उत्कृष्ट साधनों के प्रयोग का समर्थन करते हैं वहीं वह निकृष्ट साधनों के द्वारा मनोरंजन करने को दुःख का कारण बताते हैं।

शश्ठम अध्याय में डॉ0 नरेन्द्र कोहली के कृष्णपरक उपन्यासों में राजनीतिक जीवन–मूल्यों का वर्णन किया गया है। वह कहते हैं कि आदर्श राजनीति अपना स्वार्थ नहीं बल्कि जनता का हित साधती है। परन्तु आज की राजनीति में केवल अपना स्वार्थ और अपना हित साधा जाता है। कोहली जी ने अपने कृष्णपरक उपन्यासों में आज की राजनीति के इसी गिरते हुए स्तर का गहन चिंतन किया है। उनके आदर्श और पौराणिक पात्र नये कलेवर में इसी चिन्ता से ग्रस्त एवं राजनीतिक समस्याओं षड्यन्त्रों से जूझते दिखाई देते हैं।

सामन्तवादी जीवन–मूल्य के विषय में वह कहते हैं कि यह जीवन–मूल्य प्राचीन काल का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण मूल्य था। यह मूल्य राजनीति में आज भी पाया जाता है परन्तु इसका स्वरूप बदल गया है। कोहली जी ने इस जीवन–मूल्य के द्वारा आज की राजनीतिक व्यवस्था पर कटाक्ष किया है। वह यह जानते हैं कि आज की राजनीतिक दशा भी धृतराष्ट्र की सामन्तवादी व्यवस्था के जैसी हो गयी है। समाज और राज्य को यदि उत्थान और विकास के पथ पर ले जाना है तो युधिष्ठिर जैसे आदर्श पात्रों की आवश्यकता होगी।

कोहली जी सामन्तों के विषय में कहते हैं कि सामन्त राज्य के प्रति वफादार होते हैं वह सदा अपने राजा की प्रशंसा भी करते हैं व राज्य की भलाई में लगे रहते हैं। यदि राज्य में उनका अपमान होता है तो वे राज्य में एक पल भी नहीं रहना चाहते। वह सत्य का पक्ष नहीं लेते वरन् यह देखते हैं कि कौन प्रबल है वे उसी के साथ होते हैं जिससे उन्हें लाभ प्राप्त होता है। सामन्त अपने राजनीतिक लाभ के लिए राज्य के पारिवारिक लोगों में कलह का कारण भी होते हैं। वे राजनीति में तटस्थ नहीं हो सकते उन्हें एक पक्ष बनना ही पड़ता है। सामन्त धर्म के साथ नहीं वरन् सत्ता के

साथ होते हैं क्योंकि सत्ता उनका पोषण करती है, साथ ही सत्ता उन सामन्तों को निरंकुश शासन करने में उनकी सहायता करती है।

पूँजीवादी जीवन–मूल्य के विषय में कोहली जी कहते हैं कि यह वैयक्तिक सम्पत्ति और पूँजी का पक्षधर है। कोहली जी के कृष्णपरक उपन्यासों में सभी निकृष्ट पात्र पूँजीवाद का समर्थन करते हैं, सत्यवती, धृतराष्ट्र, दुर्योधन, दुशासन, कर्ण, गाँधारी आदि पात्र तो पूँजीवाद के घोर समर्थक हैं वे सम्पूर्ण पूँजी पर अपना एक छत्र अधिकार रखना चाहते हैं वह पूँजी और सत्ता पर अपना अधिपत्य स्थापित करने के लिए अपने सगे सम्बन्धियों की हत्या करने से भी पीछे नहीं हटते। पूँजीवाद, श्रमिक या जनता के शोषण का प्रतीक है, वह निर्धन जनता का शोषण करके अधिक से अधिक धनवान होता जाता है, पारिवारिक सम्बन्ध पूँजीवाद के लिए कोई महत्त्व नहीं रखते, पारिवारिक सम्बन्ध इसके लिए सबसे बड़ा खतरा होते हैं। पूँजीवादी षड्यन्त्र रचकर दूसरे की पूँजी पर कुंडली मार कर बैठ जाता है और फिर यह भी स्वीकार नहीं करना चाहता कि वह दूसरे के अधिकार पर अधिपत्य जमाकर बैठा है। निर्धनता और अभावों से ग्रस्त व्यक्ति सुख–सुविधाएँ व भोग विलास के लिए पूँजीवाद की ओर कदम बढ़ाता है परन्तु समाजवाद सदा ही पूँजीवाद का विरोध करता है और उसे यह करना भी चाहिए।

जनतंत्रवादी जीवन–मूल्य का वर्णन करते हुए कोहली जी कहते हैं कि समाज हित के लिए जनतंत्र की बहुत आवश्यकता होती है क्योंकि जनतंत्र जनता का शासन होता है। जो शासन जनतंत्र पर आधारित न हो, वह शासन, शासन नहीं कहलाता। उससे कभी भी मानव का कल्याण नहीं हो सकता। वह तो पशुबल से किया गया शासन होता है। जिस राज्य में जनतंत्र नहीं होता उस राज्य का विकास कदापि नहीं हो सकता, स्वच्छन्द और निरंकुश शासक कभी नहीं चाहता कि उसके राज्य में जनतंत्र के समर्थक रहें स्वच्छन्द और सत्ता के लालची व्यक्ति का सत्ता के केन्द्र में रहना जनतंत्र के लिए घातक होता है। परन्तु जनतंत्र वादी यही चाहता है कि सम्पूर्ण संसार में जनतंत्र वादी व्यवस्था हो, प्रजा में कहीं असन्तोष न हो, प्रजा पर कहीं अत्याचार, उत्पीड़न शोषण न हो। वह सम्पूर्ण संसार में इसी व्यवस्था को लागू करना चाहता है।

वर्ग–संघर्ष के विषय में कोहली जी कहते हैं कि सत्ता और शक्ति के घमण्ड में प्रारम्भ हुआ संघर्ष कभी शुभ नहीं होता, परन्तु जब किसी व्यक्ति के मन में दूसरे व्यक्ति की सम्पत्ति पर अधिपत्य स्थापित करने की भावना आती है, तो वर्ग–संघर्ष का उदय होता है, राजनीति में वर्ग–संघर्ष अवश्यंभावी है। कोहली जी कहते हैं कि दूसरे के विकास को देख कर हीन वृत्तियों से भरे हुए व्यक्ति के मन में द्वेष की भावना भर जाती है और यही द्वेष की भावना एक दिन वर्ग–संघर्ष का रूप ले लेती है। साथ ही जब व्यक्ति दूसरे का अधिकार छीनने में असफल हो जाता है, तब उसकी दूषित मनोवृत्ति हिंसा चाहने लगती है और फिर प्रारम्भ होता है वर्ग–संघर्ष। राजनीतिक वर्ग–संघर्ष में सदृवृत्तियाँ ही नहीं भाइयों का स्नेह भी जल कर नष्ट हो जाता है।

कोहली जी कहते हैं कि समाज में वैचारिक संघर्ष, जातिगत संघर्ष, विश्वास–अविश्वास के लिए संघर्ष, न्याय–अन्याय का संघर्ष, धर्म–अधर्म का संघर्ष, नारी को प्राप्त करने के लिए संघर्ष आदि पाया जाता है। परन्तु परिवार का वृद्ध व्यक्ति कभी भी नहीं चाहता कि समाज और परिवार में वर्ग संघर्ष हो।

सप्तम अध्याय में डॉ0 नरेन्द्र कोहली के कृष्णपरक उपन्यासों में कुछ अन्य मूल्यों का भी वर्णन किया गया है कलागत जीवन–मूल्य, सांस्कृतिक जीवन–मूल्य, धार्मिक जीवन–मूल्य, व नियति सम्बन्धी जीवन–मूल्य हैं। कलागत जीवन मूल्य के विषय में कोहली जी कहते हैं कि कलागत जीवन मूल्य मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण मूल्य है। इसका सम्बन्ध मानव हृदय से है वह कहते हैं कि कलाकार की कला पर यदि देखने वाला मुग्ध न हो जाए तो कलाकार की कला किस काम की। कला की साधना करने वाले व्यक्ति को अपना मन और चरित्र स्वच्छ रखना चाहिए मन सात्विक न हो तो कला से भी व्यक्ति को सांसारिक भोग ही प्राप्त होता है, कलाकार का जीवन बहुत ही सरल होता है, कला उसे ईश्वर प्रदत्त एक वरदान है। किसी कलाकार की कला को परखे बिना उसके सही रूप को नहीं जाना जा सकता, उसकी कला के द्वारा ही व्यक्ति को आनन्द की अनुभूति होती है। कलाकार को कला के मार्ग में आने वाली बाधाओं पर मुग्ध न होकर केवल कला को ही प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

सांस्कृतिक जीवन–मूल्य भी मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण जीवन–मूल्य है इसके अभाव में मानव का पूर्ण विकास नहीं हो सकता संस्कृति मानव को जीवन आदर्शों पर चलने की शिक्षा देती है एवं मानव को शुद्ध एवं परिष्कृत करती है। कोहली जी भारतीय संस्कृति की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि भारतीय संस्कृति में सम्बन्धों का सम्मान होता है आयु का नहीं, इसमें राजाओं का व्यवहार दस्यु जैसा नहीं होता है। संस्कृति एक ऐसा गुण है जिसका पालन करने से व्यक्ति में उदात्तता और सात्विकता जैसे भावों का विकास होता है। इसी के द्वारा व्यक्ति पशु से मानव बनता है। आदर्श संस्कृति में विश्वास रखने वाला व्यक्ति उदार होता है।

भारतीय संस्कृति एक ऐसी संस्कृति है जिसमें गुरु शिष्य को अपनी संस्कृति सिखाता है, जिसमें पुत्री अपने परिवार के अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए तत्पर हो उठती है। पुत्री अपने पिता के द्वारा चुने गए वर को सहर्ष स्वीकार कर लेती है। नारी ने अपनी इस संस्कृति को अक्षुण्ण रखा है। पुरुष भी नारी का सम्मान करता है। इसमें लोग एक दूसरे के साथ सहयोग व प्रेम से रहते हैं। स्त्री को पुरुष के बराबर अधिकार प्राप्त होते हैं

कोहली जी के मन में इस बात को लेकर दुःख और पीड़ा है कि आज का युवा वर्ग अपनी सभ्यता और संस्कृति को जैसे भूल गया है। अपने वृद्धों और गुरुओं का सम्मान तो जैसे उसके जीवन से नष्ट ही हो गया है। आज वह समाज के वृद्ध और अनुभवी व्यक्तियों द्वारा बनायी गयी परम्पराओं और संस्कृति को समाप्त करके नयी परिपाटियाँ बनाना चाहता है।

धार्मिक जीवन मूल्य को कोहली जी मानव जीवन का सबसे उदात्त मूल्य मानते हैं वह कहते हैं कि व्यक्ति को कभी भी धर्म की अवहेलना नहीं करनी चाहिए तथा धर्म के एक पक्ष को ही नहीं देखना चाहिए जो व्यक्ति धर्म के एक ही पक्ष को देखता है उस व्यक्ति को सदैव पीड़ित होना पड़ता है। व्यक्ति कभी–कभी यह नहीं समझ पाता कि उसका धर्म क्या है? इसीलिए वह अपने पारिवारिक हितों और स्वार्थों के लिए अपने मानवीय धर्म को भूलता चला जा रहा है। अधर्म का पालन करने से व्यक्ति समृद्ध तो हो सकता है, परन्तु उसका विकास नहीं होगा, किन्तु धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति अपनी समृद्धि के साथ–साथ अपना विकास भी कर सकता है एकांगी धर्म कभी भी मानव और समाज के हित का साधन नहीं बन सकता, उससे समाज को हानि ही होती है। धार्मिक व्यक्ति किसी एक व्यक्ति का हित नहीं चाहता वह तो सम्पूर्ण सृष्टि का हित चाहता है वह केवल धर्म का पक्ष लेता है। अपने निजी सम्बन्धों के प्रति उसका कोई लगाव नहीं होता, वह कभी भी धर्म की अवहेलना नहीं करता, उसका त्याग नहीं करता, त्याग करता भी है तो भोग का क्योंकि संसार का सबसे बड़ा सुख धर्म ही है धर्म संसार को धारण करता है जो व्यक्ति धर्म का त्याग

करता है उसका नाश हो जाता है। धर्म को वैयक्तिक दृष्टि से नहीं वरन् समष्टिगत दृष्टि से देखना चाहिए।

नियति सम्बन्धी जीवन–मूल्य के विषय में कोहली जी का विचार इसके विपक्ष में ही है। कोहली जी बौद्धिकतावादी लेखक होने के कारण नियति या भाग्य पर विश्वास नहीं करते। उनका दर्शन भाग्य या नियति का विरोध करता है। परन्तु फिर भी कृष्णपरक उपन्यासों में कथा के पात्रों के अनुसार यह मूल्य भी आया है वह कहते हैं कि नियति के आगे हर व्यक्ति सिर झुका लेता है, क्योंकि वह नियति को ईश्वरीय विधान मानता है। भीष्म भी विधाता की इच्छा के आगे अपना सिर झुका लेते हैं, क्योंकि व्यक्ति विधाता के निर्णय को बदल नहीं सकता। कोहली जी कहते हैं कि नियति व्यक्ति को रंक से राजा और असहाय से सर्वशक्तिशाली बना सकती है। कभी–कभी व्यक्ति जैसा सोचता है योजना बनाता है वैसा होता नहीं। होता तो वही है जो नियति चाहती है। जिसके साथ नियति या ईश्वर होता है उसे कोई नहीं मार सकता उसकी हत्या कोई नहीं कर सकता। उद्धव कृष्ण के प्राणों को बचाने में पूर्ण रूप से नियति का योगदान मानते हैं वह कहते हैं–बस एक बार अतिवृष्टि हुई और ईश्वर की सारी योजना पूरी हो गयी.... यह योजना तो ईश्वर की बनायी हुई लगती है। नियति के सामने व्यक्ति इतना असहाय हो जाता है कि उसकी समझ में नहीं आता कि क्या करे? वह व्यक्ति को संसार में ऐसे ही नहीं भेजती। उसके पीछे ईश्वर का कोई न कोई रहस्य छिपा रहता है।

कोहली जी इस बात को नहीं भूले हैं कि संसार में ऐसे भी बहुत से लोग पाये जाते हैं जो अपनी इच्छा शक्ति से नियति को बदलने की क्षमता भी रखते हैं। इसलिए उसे यह सोच कर की नियति ही सब कुछ करेगी हताश नहीं बैठ जाना चाहिए, उसे बाहर निकल कर जीवन संघर्ष की ओर बढ़ना चाहिए।

अन्य मूल्यों के अन्तर्गत कृष्णपरक उपन्यासों में आये इन मूल्यों का विस्तृत मूल्यांकन किया गया है, साथ ही शोध कार्य का समाहार भी किया गया है।

अन्त में परिषिश्ट के रूप में सन्दर्भ ग्रन्थ हिन्दी, सन्दर्भ ग्रन्थ अंग्रेजी, शब्द कोश हिन्दी एवं शब्द कोश अंग्रेजी की सूची संलग्न की गयी है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि कोहली जी ने अपने कृष्णपरक उपन्यासों में प्राचीन युग की समस्याओं कुण्ठा, त्रास की स्थिति का अवलोकन आज की युगीन परिस्थितियों में किया है साथ ही अन्याय पीड़ित एवं भँवर में फँसी मानवता को कृष्ण के माध्यम से सुदृढ़ आधार प्रदान करने हेतु जीवन–मूल्यों के अन्वेषण का विलक्षण प्रयत्न किया है। वह मानव जीवन की समता और स्वतंत्रता को महत्त्वपूर्ण जीवन–मूल्य के रूप में प्रतिष्ठापित करते हैं। इसी के साथ तद्युगीन सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित कर समाज को स्वस्थ एवं सम्यक् विकास देने का प्रयास भी करते हैं।

कोहली जी यह देखते हैं कि प्राचीन और नवीन दोनों युगों में मानव की समस्याएँ एक जैसी बनी हुई हैं, उनके कृष्णपरक उपन्यास अलौकिक, सामाजिक बोध को बताने वाले हैं उन्होंने अपने कृष्णपरक उपन्यासों में जीवन के उदात्त, महान तथा सात्त्विक पक्ष का समर्थन एवं चित्रण किया है।